

कुदरत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पृथ्वी पर जीवन है। अन्य ग्रहों पर जीवन नहीं है। जिस पर जीवन नहीं होता वह अलोक कहलाता है। लोक में जीवन होता है। इस प्रकार लोक और अलोक दो अलग-अलग हैं। छः तत्त्व जहां पाये जाते हैं वह लोक कहलाता है। ये छः तत्त्व—धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल और जीव हैं। कुदरत को ब्रह्माण्ड, सृष्टि, संसार, पर्यावरण कहते हैं। जिसमें हम जी रहे हैं वह कुदरत ही है।

जीव तत्त्व असंख्य और अनन्त हैं। ये सभी जीव तत्त्व चार गतियों और चौरासी लाख जीव योनियों में कर्म के अनुसार जन्म लेते और मरते रहते हैं। आत्मा न तो घटती है और न बढ़ती है। परमाणु भी न घटते हैं न बढ़ते हैं केवल रूपान्तरण होता है। द्रव गैस में बदलता रहता है। यह अनादिकाल से चल रहा है। आत्मा हमारा अस्तित्व है। आत्मा चली गयी तो शरीर बेकार हो गया। अपने अस्तित्व को जान लेना ही सब कुछ जान लेना है। प्रश्न होता है कि ये कुदरत क्या है? कुदरत प्रकृति को कहते हैं, सृष्टि को कहते हैं, चौरासी लाख जीव योनियों का निवास स्थान प्रकृति है। कुदरत ही सबकी रक्षा करती है। मानव प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है जिसका परिणाम है नई-नई बीमारियों का होना, प्रकृति में परिवर्तन होना, जलवायु का विषम होना आदि। यद्यपि समय-समय पर प्रकृति मानव को सुधार का संकेत देती रहती है लेकिन अहंकार के वशीभूत होकर के मानव उस संकेत को नहीं समझता है। कोरोना जैसी महामारी के मूल में प्रकृति के साथ हस्तक्षेप मुख्य कारण दिखाई देता है।

कुदरत पंचभूतों से बनी है। यह ब्रह्माण्ड ही कुदरत है। यहां सभी प्राणी अपने कर्मों के फल का भोग करने के लिए जन्म लेते हैं। जिसका जैसा कर्म रहता है वह वैसी योनि में जन्म प्राप्त करता है। शुभ कर्म करने वाला अच्छी योनि में जन्म प्राप्त करता है और बुरा कर्म करने वाला बुरी योनि में जन्म प्राप्त करता है। जन्म और मृत्यु की परम्परा अनादि है।

हमारे चारों तरफ पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश और वनस्पतियों का परिमण्डल व्याप्त है। इन्हीं से कुदरत की संरचना होती है। कुदरत को स्वच्छ रखने का अर्थ है—पर्यावरण को स्वच्छ रखना। पर्यावरण के संरचना में सभी तत्वों का बराबर योगदान है। जब मानव का उद्भव हुआ था, तब प्राकृतिक संसाधन मानव की जरूरतों को देखते हुए प्रचुर मात्र में उपलब्ध थे। जैसे—जैसे जनसंख्या बढ़ी, अत्यधिक मात्रा में भोजन तथा आश्रय के लिये संसाधनों की जरूरत पड़ी और तब इन्हें पर्यावरण से अधिकाधिक रूप से प्राप्त किया गया। तेजी से बढ़ती जनसंख्या द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग करने के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हो रहा है। इस अत्यधिक दोहन का नतीजा मृदा, जैव विविधता में कमी और भूमि, वायु और जलस्रोतों के प्रदूषण के रूप में दिखायी पड़ रहा है।

अत्यधिक दोहन के कारण पर्यावरण अतिक्रमण के चलते यह मानव जाति और उसकी उत्तरजीविता के लिये अनेक खतरे उत्पन्न कर रहा है। प्रकृति में पारिस्थितिकी संतुलन पाया जाता है। विभिन्न जीवों के क्रियाकलाप प्रायः संतुलित होते हैं। अजैविक और जैविक घटकों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध इतना सधा होता है कि प्रकृति में एक प्रकार का संतुलन बना रहता है। जैसे—जैसे समय बीतता जाता है, मानव क्रियाकलापों के द्वारा इस संतुलन में हस्तक्षेप होता जा रहा है। अनियंत्रित मानव क्रियाकलापों के कारण पर्यावरण की क्षति हो रही है।

वन प्राकृतिक संसाधन हैं, लेकिन मनुष्य खेती करने के लिये और घर बनाने के लिये वनों को काटता जा रहा है। इसके अलावा वृक्षों को काटकर लट्टों को अपने घर बनाने के लिये और फर्नीचर या ईंधन के रूप में प्रयोग कर रहा है। जिस दर से वृक्ष काटे जा रहे हैं, वह वृक्षों को उगाने की दर से काफी अधिक है और शीघ्र ही वन वृक्ष रहित हो जायेंगे। पेड़ों के वाष्पोत्सर्जन द्वारा पानी भी पर्यावरण में पहुँचता रहता है, जिससे वर्षा वाले बादल बनते हैं। पेड़ों की कटाई और वनों के काटे जाने के कारण उन क्षेत्रों में वर्षा कम होती है। पौधों और वृक्षों की कटाई के कारण मृदा अपरदन को भी बढ़ावा मिलता है।

अनवीकरणीय ऊर्जा के स्रोत जैसे कोयला, प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम पदार्थों को जिस तेजी से उपयोग किया जा रहा है, उसके उनके समाप्त होने की सम्भावना है। कोयला,

लकड़ी, पेट्रोल आदि के अत्यधिक मात्र में जल जाने के कारण विषैली गैसों सल्फर डाइ ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड और हाइड्रोकार्बन वायु में मिल जाती है। ये गैसों उद्योगों, विद्युत संयंत्रों, मोटर गाड़ियों और वायुयानों से भी निकलती हैं। खानों से निकला अम्लीय जल कल-कारखानों, खेतों से निकले रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों से निकले अपशिष्ट नदियों और दूसरे जलस्रोतों को प्रदूषित करते हैं। घरों और कल-कारखानों से निकलने वाले ठोस एवं द्रव अपशिष्टों से गाँवों, शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों में दिन प्रतिदिन मृदा प्रदूषण की समस्या बढ़ रही है। कुदरत को समझने के लिए उसकी संरचना को समझना होगा। कुदरत का नियम है कि सुख-दुःख आते-आते रहते हैं जो जैसा करता है उसे वैसा भुगतना पड़ता है। यह शाश्वत नियम है।